

B.M. COLLEGE, RAHIKA MADHUBANI



L.N.M.U DARBHANGA

Dr. ADITI BHARTI
Assistant Professor
(Guest Faculty)
Department of Sociology

सामाजिक समूह (Social Group)

मनुष्य का जीवन वास्तव में सामूहिक जीवन है। मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहने का तात्पर्य भी यही है कि वह समूह में रहता है। प्रत्येक व्यक्ति का जन्म समूह में ही होता है एवं समूह के माध्यम से ही वह अपनी आवश्यकता की पूर्ति एवं पूर्ति करने के तरीके को सीखता है। इस तरह मनुष्य का जीवन समूह (जैसे – परिवार) की सदस्यता से ही शुरू होता है। जॉनसन (Johnson) के अनुसार समाजशास्त्र वह विज्ञान है, जो समूहों का अध्ययन करता है।

समूह के लिए एक शर्त यह है कि सहयोगी सामाजिक संबंधों को ही प्राथमिकता देंगे, अगर संघर्ष दिखायी पड़ने लगे तो उसे समूह की जगह समाज कहना सही होगा।

समूह तथा सामाजिक समूह में अंतर है। समूह शब्द का प्रयोग हम व्यक्तियों के संग्रह के लिए करते हैं, लेकिन सामाजिक समूह में सामाजिक अंतःक्रिया (Social interaction) या सामाजिक संबंध (Social relationship) का होना आवश्यक है। सामाजिक समूह निर्माण के चरण को निम्नवत् देखा जा सकता है –

रॉबर्ट बीरस्टीड (Robert Bierstedt) ने अपनी पुस्तक सोशल आर्डर (Social Order) में स्वजातीय चेतना (Consciousness of kind) , सामाजिक अंतःक्रिया (Social interaction) एवं सामाजिक संगठन (Social organization) के आधार पर समूह को निम्न चार भागों में वर्गीकृत किया –

(1) सामाजिक श्रेणी (Social category) – सामाजिक श्रेणी व्यक्तियों का संग्रह है, जिनमें कुछ साझी विशेषताएं पायी जाती हैं | इनमें स्वजातीय चेतना , सामाजिक अंतःक्रिया एवं सामाजिक संगठन नहीं पाया जाता है , जैसे – उम्र एवं लिंग (Age and Sex) या समान व्यवसाय के आधार पर समूह |

(2) समतामूलक समूह या समूहता (Societal group or Collectivity) – इस समूह का निर्माण समान लक्षणों के आधार पर ही नहीं बल्कि स्वजातीय चेतना के समावेश होने पर होता है , लेकिन सामाजिक अंतःक्रिया एवं सामाजिक संगठन की अनुपस्थिति रहती है | लेकिन इसमें अंतःक्रिया को जन्म देने की पूर्ण क्षमता पायी जाती है , इसलिए इसे सामाजिक समूह की पूर्ववर्ती अवस्था कहा जाता है , जैसे – जाति |

(3) सामाजिक समूह (Social group) – सामाजिक समूह में स्वजातीय चेतना के साथ सामाजिक अंतःक्रिया भी पायी जाती है | सामाजिक समूह का निर्माण कुछ मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होता है, इसलिए परिवार को सामाजिक समूह का आदर्श उदाहरण माना जाता है |

आगबर्न एवं निमकॉफ (Ogburn and Nimkoff) के अनुसार - जब कभी दो या दो से अधिक व्यक्ति एकत्रित होते हैं एवं एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं तो सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं |

(4) समितीय समूह (Associational group) – जब स्वजातीय चेतना के साथ अंतःक्रिया एवं अंतःक्रियाओं का संगठित रूप सामने आने लगता है तब उसे समितीय समूह कहते हैं | सामाजिक समूह में व्यक्ति की सामान्य आवश्यकता की पूर्ति होती है जबकि समितीय समूह द्वारा व्यक्ति अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करता है |

बीरस्टीड ने अपने द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरण में **एकत्रीकरण (Aggregate)** का प्रयोग नहीं किया है ,जबकि **एंथोनी गिडेन्स (Anthony Giddens)** के अनुसार एकत्रीकरण की चर्चा के बिना सामाजिक समूह की चर्चा नहीं हो सकती | एकत्रीकरण समूह निर्माण की प्रारंभिक अवस्था है |

प्राथमिक एवं द्वितीयक समूह (Primary and secondary group)

प्राथमिक समूह (Primary group) - प्राथमिक समूह एक छोटा सामाजिक समूह है जिसके सदस्य व्यक्तिगत एवं करीबी संबंध में बँधे रहते हैं, जैसे – परिवार, बचपन के मित्र आदि।

सर्वप्रथम सी. एच. कूले (C. H. Cooley) ने अपनी पुस्तक **सोशल ऑर्गनाइजेशन (Social Organisation)** में प्राथमिक समूह शब्द का प्रयोग किया जिन्होंने प्राथमिक संबंधों के आधार पर व्याख्यायित करते हैं। कूले के अनुसार प्राथमिक संबंध वे संबंध हैं जिसमें आमने सामने का सहयोग एवं घनिष्ठता हो (**Face to face association and cooperation predominates**)। प्राथमिक संबंधों के आधार पर जो समूह विकसित होता है उसे कूले प्राथमिक समूह कहते हैं।

कूले के अनुसार प्राथमिक समूह से मेरा तात्पर्य वे समूह जिसमें आमने-सामने के घनिष्ठ सहयोग हो, वे बहुत मायने में प्राथमिक हैं लेकिन मुख्य रूप से सामाजिक प्रकृति एवं व्यक्ति के आदर्श निर्माण करने का आधार है (By primary group I mean those characterized by intimate face to face association and cooperation. They are primary

face to face association and cooperation. They are primary , in several sense but chiefly in that they are fundamental in framing the social nature and ideals of the individuals.)

प्राथमिक समूह मानसिक आवश्यकता की पूर्ति ,अत्यधिक घनिष्ठता तथा अनौपचारिकता को व्यक्त करता है । कूले ने परिवार , क्रीड़ा समूह एवं पड़ोस को प्राथमिक समूह माना है । फेयरचाइल्ड के अनुसार प्राथमिक समूह की अधिकतम संख्या 50 हो सकती है ।